

शवे तार

थानो

औंधेरी रात

लेखक

मॉरिस मेटरलिक

अनुवादक

प्रेमचंद

हंस प्रकाशन

४ लक्ष्मी बाग

© अमृतपत्र

प्रकाशक

ईश प्रकाशन इलाहाबाद

मुद्रक

भास्कर प्रेस इलाहाबाद

आवरण

कृष्ण चंद श्रीवास्तव

मुख्य

डि. इत्या

दो शब्द

प्रस्तुत नाटक सितम्बर-अक्तूबर १९१६ के 'जमाना' में निकला था।

इस सम्बन्ध में सुश्री प्रेमचन्द का २ सितम्बर का यह पत्र, जो उन्होंने 'जमाना' के सम्पादक को लिखा था, इष्टम्भ है—

“‘घड़े तार’ का बड़िया हिस्सा खाना करता है। मैटर्प्लिक का एक ड्रामा *Sightless* नाम का है। *Scott Library* के सिलसिले में मिलेगा। उसमें एक ड्रामा और भी है। उसका नाम *Pelicas and Melisanda* है। मैं उसे हिन्दी में लहना कर रहा हूँ। ये रिताबें मुझे बहुत पसन्द हैं। यह ड्रामा धाम हो जाये तो आपके पास भेज दें। मैंने हरबर्ब कोमिन्स की कि इस *Allegory* को तुलनाई लेटिन दूरी कामयाबी नहीं हुई। ‘घड़े तार’ का हिन्दी एडिशन मय बीबाबे के शाया हो रहा है लेटिन बहु बीबाबा कुछ पीतपीत है।”

‘घड़े तार’ का हिन्दी एडिशन वहीं देखने में नहीं आया। क्या नहीं आया भी था किन्तु बात होकर यह नयी। मुस्तक रूप में तो आयर बह उर्दू में न नहीं निकला।

Pelicas and Melisanda का अनुबाह उर्दू का हिन्दी किसी भाषा में अब तक प्राप्त नहीं हो सका, न ‘जमाना’ में न किसी दूसरे उर्दू का हिन्दी रूप में और न मुस्तकावार।

‘घड़े तार’ उर्दू का लो अर्ध उर्दू रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है — हाँ, बटिन धारों का अब अटमोट में दे दिया गया है।

अमृतचय

लेखक परिचय

मैटर्नल कैम्ब्रिज का डिप्लोमा-डाक्टरेट डिप्लोमा, सायर और
 मेडिकल मोबिल ग्राहक का इन्टरनर^१ हासिल कर चुका है।
 कुमों में तत्पुत्र का रंग पातिव है, लेकिन वह तत्पुत्र नहीं जो
 मो-सारा^२ डिप्लो मो-ग्रहण^३ और डिप्लो डिप्लो^४ के तत्पुत्र^५
 रंग रहता है, बल्कि वह तत्पुत्र जो कृष्णी बल्लै,^६ धारिणी
 ११ हयान^७ मो-माल^८ के धारण^९, मुद्र^{१०} की-मालीयन^{११} का
 तर^{१२} और मुद्रस्तर^{१३} है। वह धरतर ऐसी रहानी बल्लैयों पर
 टुंभना है जहाँ धाम मोघरा^{१४} के तापरे-वरवा^{१५} के पर बलने हैं।
 वह महक समाई^{१६} बल्लै नहीं लिपना, उसको निपादे-बालिन^{१७}
 न है। उनसे कृष्णी मुद्राहिवा^{१८} दिये हैं और इस रंग में धोर
 न लानो^{१९} नहीं रखता।

प्रेमचंद

१. अरर २. निरररर ३. औरर ४. अररररर ५. छोटे और बराब ६. दिने और अररर
 और विररर ७. अरररर ८. बाला के अररर ९. बाल के अररर १०. औरर ११. अरर
 अररर १२. अरररर १३. विरररर १४. अररररर १५. अररर १६. अरररर १७. अरररर-ररर
 अररर १८. औरर और अररर, बाल-अरर १९. अरररररर २०. अरररर

शवे तार
यानो
अँधेरी रात

(मन्दर^१—एक बहुत पुराना जित्तए-धुमाली^२ का जंगल जिससे
 क्रिम^३ के सातार^४ नुमाया^५ हैं। सातमान तारों से पुर^६। जंगल के
 बस्त^७ में, प्राची रात के करीब एक मुझा बरबेग^८ हवाह लबारा घोड़े
 बठा हुआ है। उसका सर और क्रिम का बान्नाई^९ हिरता जो किसी
 शहर नीचे को मुझा हुआ और जित्तए के हिम-धी-हुरकत^{१०} है एक
 झलकभूत के बरबेग से ठिका हुआ है। यह बरबेग बड़ा बंदाड़ और
 घनवार है। उसका चेहरा जित्तए का है। उस पर राक की-सी बेरवी
 छापी हुई है और उसके नीचे होंठ जुने हुए हैं। उसकी बानिह^{११} और
 बबरायो हुई प्राँचें मन्दर^{१२} के चुम्बरे जामिर^{१३} की तरफ नहीं देखती और
 पमहाए-देरीना^{१४} से लूँकियाँ^{१५} मामूम हो रही हैं। उसके मुरामी^{१६} और
 लड़ा बात उसके चेहरे पर बिजरे हुए हैं जो इस लहुराए तारीक^{१७} का
 तनाम जोड़ों से बजाया मुजमहिल^{१८} और रोजन है। उसके निहायत लापर
 हाव उसके सीने पर चकड़े हुए पड़े हैं। उसके बाहिने जानिब द बुन्दे
 और धंये साक्षी बददाओं, मुची पत्तियों और बरबनों के टूँडों पर बंटे
 हुए हैं। बायी तरफ उनके मुकाबिल द बुड़ी धंपी औरते बंठी हुई हैं।
 बानिवाल में एक मिरा हुआ बरबेग और पावर के टुकड़े हायत हैं। तीन
 धंपी धोरतें एक घर-मुघसितर^{१९} अबाज से जुड़ा कर रही है और रो
 रही हैं। एक धोरत निहायन किम मिन^{२०} है। बाँधों धोरत धूयो धोर
 बमभी है। उसकी धोर में एक छोटा-सा लड़का जो रहा है। धंभी
 धोरत धावी मोजबान है और उनके लंबे-लंबे बालों से उसका सारा जिन्म
 ढँका हुआ है। कई धीर धीरतें सब के सब एक ही क्रिम के हवाह धीर

१ मन्दर २ जलती मरह ३ साक्षीना ४ बरबेग ५ लुम्बट ६ बंदा हुआ ७ बरब
 ८ बंदा ९ करी १० निरबज निम्बट ११ मिर १२ बपानमका १३ मन्दर बंदिम
 १४ हवाह बंदा १५ लूँक बरबाजी हुई १६ बानिवाल १७ जंघेरी बंदिम १८ बंदा हुआ, बरब
 १९ बपानमका २० बुझी

झीले झाले कपड़े पहने हुए हैं। जंगमें से बकसूर कुहनिर्मा सुदनों पर रखके
 हुए धीरे बेहूतों को हाथों से बिनाये हुए मुरते इंतजार में हैं। ऐसा
 मामूली होता है कि वह इतारे धीरे धरातल की धारत को भूल गये हैं।
 वह इस बखीरे के पैरों-सोरो-मुस पर बरा भी सर नहीं धिक्काते। बड़े-
 बड़े मातली बरकत धरा-सिद्धम^२ केबहार ब बसुत ब सगोबर उन्हें अपने
 तारीक^३ धीरे बकसूर लाये में दियाये हुए हैं। सापू से बोड़ी दूर बर
 लंबे-लंबे बरब नर्मियों के कुल बिले हुए हैं। बाबजूके कि बड़ी बरब की
 किरने बसियों से धन-धनकर अभीन पर बाली हैं धीरे तारीको^४ को
 हुम्मे की बोधिस करती हैं, फिर भी बवलमें अभीक^५ सायेकी छमी
 हुई है।)

पहला नाबीना

क्या वह अभी नहीं था रहे हैं ?

दूसरा नाबीना

तुमने मुझे जगा दिया ।

पहला नाबीना

मैं भी सो गया था ।

तीसरा नाबीना

मैं भी सोता ही था ।

पहला नाबीना

क्या वह धमो नहीं घा रहे हैं ?

दूसरा नाबीना

मुझे किसी के घामे को घाहट नहीं मिसती ।

तीसरा नाबीना

अब छानडाह^१ में लौट जाने का वक्त करीब होगा ।

पहला नाबीना

हम यह जानना चाहते हैं कि हम कहीं हैं ?

सबसे बड़का नाबीना

कोई जानता है कि हम कहीं हैं ?

सबसे बड़की अंधी औरत

हम बहुत देर तक चसते रहे थे । हम जल्द छानडाह से बहुत प्रसने पर हैं ।

पहला अंधा आदमी

ओ हो क्या धीरखें हमारे मुलाबिन हैं ?

सबसे बड़की अंधी औरत

हाँ हम तुम्हारे सामने बैठी हुई हैं ।

पहला अंधा आदमी

उदरो, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ । (वह उठार दपर-उपर ट्योमता है ।) तुम कहीं हो ? बोसो ताबि मुझे घायाज से कुछ पता चये ।

सबसे बुद्धी मंघी भीरत

हम यहाँ पत्थरों पर बेठी हुई हैं।

पहला नाबीना

(वह आगे बढ़ता है और गिरे हुए दरख्तों और बूटानों से ठोकर खाता है।) हमारे बर्तमान कुछ हासल है।

दूसरा नाबीना

वहाँ बैठे हो वहीं बैठे रहो। यह बेहतर है।

तीसरा नाबीना

तुम कहाँ बैठे हो? क्या हमारे पास आना चाहते हो?

सबसे बुद्धी मंघी भीरत

हम खड़ी नहीं हो सकतीं।

तीसरा नाबीना

इन्होंने हम लोगों को अलग अलग क्यों कर दिया?

पहला नाबीना

मुझे भीरतों की तरफ से घुसा करने की आवाज आ रही है।

दूसरा नाबीना

हाँ तीनों बुद्धी मंघी भीरतें घुसा कर रही हैं।

पहला नाबीना

लेकिन यह तो घुसा करने का बरत नहीं है।

दूसरा नाबीना

तुम भीग जाबर्दीगाने में जाकर समाज पढ़ना।

(तीनों भीरतों बदस्तूर दुष्मा बनती रहती हैं ।)

तीसरा नाबीना

मैं यह मानूँ करना चाहता हूँ कि मैं किससे करीबतर बैठा हुआ हूँ ।

दूसरा नाबीना

शायद मैं तुमसे करीब हूँ ।

तीसरा नाबीना

हम एक दूसरे से मिल नहीं सकते ।

पहला नाबीना

लेकिन हमारे दमियान बसादा फासला नहीं है (वह इयर-उपर हाथों से टटोलता है । उसकी छड़ी से पाँचवें घंघि को चोट लग जाती है और वह कपकप उठता है ।) बहुत हमारे करीब बैठा हुआ है ।

दूसरा नाबीना

मुझ सब आदमियों को आवाजें नहीं सुनायी देतीं । हम कुन् आदमी थे ।

पहला नाबीना

मुझे अब कुछ-कुछ हकीकत गुसने लगी है । भीरता से भी पूछ लेना चाहिए । यह खररी है कि हम भूखे-हाथ से वाजिऊ^१ हो जायें । अभी तक तीनों भीरतों की दुष्मान्यानी^२ की आवाज मेरे बान में आ रही है । क्या यह एक ही गाय बैट्टे हूँ^३ है ?

कहाँ गये ? उन्हें कोई मजाम नहीं है कि हमको तनहा छोड़ जायें ।

सबसे बुढ़ा अथा आबमी

बह बहुत दूर गये हैं, शायद घोंछों से इसका छिन्न किया वा ।

पहला माबीना

तो अब वह घोंछों ही से दोस्तों हैं ? सोचा हम सब के सब मर गये । जिस आखिर हमें उनकी शिकायत करनी पड़ेगी ।

सबसे बुढ़ा अथा आबमी

किस से शिकायत करेंगे ?

पहला माबीना

अभी यह नहीं मानूम है । खैर, देखा जायगा । लेकिन वह गये कहाँ ? मैं घोंछों से पूछ रहा हूँ ।

सबसे बुढ़ा संघी औरत

वह इतनी दूर घात-घाते चक गये थे । मुझे खयाल आता है कि वह खरा पर तक हमारे बसियान बैठे थे । कई दिनों से वह बहुत विलगिरफ्त^१ और असीस^२ हैं । अब से डाक्टर का इंतज़ान हुआ उनकी तबीयत परेशान है । वह चबास रहते हैं । शायद^३ ही किसी से दोस्तों हैं । कुछ खबर नहीं कि क्या सानिहा^४ हो गया है । आज वह खैर करले पर मुस्तिर^५ हुए । वह कहते थे कि मैं सरमा^६ शुरू होने के पहले घाघिरी बार धूप में खड़ी^७ को देगमा चाहता हूँ । ऐसा मानूम होता कि सरमा बहुत सरे और सुमानी होगा । अभी से शुयाल^८ की जानिम से बर्ज

१ विलगिरफ्त २ असीस ३ खैर ४ विलगिरफ्त ५ मुस्तिर ६ सरमा ७ खड़ी ८ सरमा

घाने मगी है। वह कुछ मुनरिह^१ भी थे। लोग कहते हैं कि पिछले दिनों के तूफानों से मत्तियों में सेनाब^२ घा गया है और पुस्तकें मुसहादिमा^३ होल जाते हैं। वह यह भी कहते थे कि मुझे समुंदर से छोड़ मामूम होता है। वह पिता बजह मुत्तातिम^४ ही रहा है और ज़बीरे की पहादियां बाओ तोर पर ऊँची नहीं है। वह गुद घपमी घाँगा म देगना चाहते थे लेकिन उन्होंने हमसे कुछ नहीं बगमाया कि क्या देगा। मुझे छयाव घाता है कि वह पगनी औरल के लिए रोटी और पानी लाने गये हैं। वह कहते थे कि शायद मुझे दूर जाना पड़े। हमारा मजबूरन इंतज़ार करना पड़ेगा।

मोजवान मंघी औरल

जात बस्त उन्होंने मेरे हाथ पकड़े थे। उनके हाथ बाँप रहे थे। मोया यह कर रहे हैं। तब उन्होंने मेरा बोमा लिया।

पहला माबोना

घरदा ।

मोजवान मंघी औरल

मैंने उनसे पूछा कि क्या बात हो गया है। उन्होंने कहा मुझे नहीं मामूम कि क्या होनबाया है। यह बात यह कि मुझे की हुबूमत घब गरम होनेवाला है। गामिरन

पहला माबोना

इसमें उनकी क्या संशा थी ?

^१ मत्तियाँ ^२ सेनाब ^३ मुसहाद ^४ मुत्तातिम

मीरजाबान अंधी औरत

मैंने भी उनका भतलन न समझा। उन्होंने मुझसे यही बताया कि मैं उस बड़े रीशानी के मीनार की तरफ जा रहा हूँ।

पहला नाबोना

क्या यहाँ कोई रीशानी का मीनार भी है ?

मीरजाबान अंधी औरत

हाँ जखीरे के शुमार में हैं। मेरा खयाल है कि हम उससे बहुत दूर नहीं हैं। वह मुझसे कहते थे कि मुझे मीनार की रीशानी यहाँ की पत्तियाँ पर पड़ती हैं नजर भायी है। मुझे धाज के से भ्रममुदा-खातिर^१ वह कभी न मालूम हुए थे और मेरा खयाल है कि वह कई दिन से रोया करते थे। मालूम नहीं क्यों ! मैं खुद भी रोयी। मैंने उन्हें जाते हुए नहीं सुना। इससे स्यादा मैं उनसे और कुछ न पूछ सकी। मैं चुन रही थी कि वह बहुत संजीदगी से मुस्करा रहे थे। मैंने यह भी सुना कि वह भागें बंद कर रहे थे और मुकूम चाहते थे।

पहला नाबोना

उन्होंने यह सब बातें हमसे नहीं कहीं।

मीरजाबान अंधी औरत

तुम उनही बातें सब सुनते थे।

सबसे बुद्धा अंधी औरत

जब वह सोसते हैं तो तुम सब वे सब जानाबुझकी करन

मगती हो ।

दूसरा नाबीना

बचने बान उन्होंने मित्र बस्सताम कहा ।

तीसरा नाबीना

राज रयादा घा गयो ।

चहत्ता नाबीना

बसत बान उन्होंने दो-तीन बार बस्सताम' कहा गोमा मोन जा रहे हा । जब यह समाप्त कर रहे थे तो मुझ ऐमा मामूम होता था कि यह मरी तरफ ताव रहे हैं । जब कोई बिगो पीठ की तरफ गौर न दगता है तो उछरी आबाब तबनीत हो जाती है ।

पाँचवा नाबीना

उन जगा पर रहम करो जिनके धार्मि नहीं है ।

षहत्ता नाबीना

मह बीन बाहियात बातें कर रहा है ।

दूसरा नाबीना

शायद यह धो है जो मुन नहीं मरता ।

चहत्ता नाबीना

जुग रगे, यह रोन का बान नहीं है ।

तीसरा नाबीना

महात्मा जी गोनी घोर पानी सेने बर्त घते ग्ये ?

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

बहु समुंदर की तरफ गये ।

तीसरा नाबीना

इस सित-प्रो-साम पर कोई इस तरह समुंदर की तरफ नहीं जाता ।

दूसरा नाबीना

क्या हम समुंदर के करीब है ?

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

हाँ, एक समझा लामोघ हो जाओ, तुम्हें उसकी आवाज सुनायी देगी ।

(तटीय से समुंदर की भीमी-भीमी सदा)

दूसरा नाबीना

मुझे तो सिर्फ तीनों औरतों के बुधा करने की आवाज आ रही है ।

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

घर से सुनो । उनकी बुधाओं के बीच-बीच में तुम्हें उसकी आवाज सुनायी देगी ।

दूसरा नाबीना

हाँ, मुझे कोई ऐसी आवाज सुनायी देती है जो हमसे दूर नहीं है ।

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

बहु सीधी हुई भी ऐसा मानूम होता है कि भब जाग रही है ।

पहला नाबीना

महारजा वो जो हम यहाँ न सामा चाहिए था । मुझे इस शीर से
प्रदिशा होता है ।

सबसे बुद्धिवा आबमी

तुम खुश जानते हो कि जखीरा बहुत बड़ा नहीं है और ज्योंही
खानकाह से बाहर निवसो यह सवा घाने लगती है ।

दूसरा नाबीना

मैंने कभी इसकी तरफ घ्यान नहीं लिया ।

तीसरा नाबीना

मुझे ऐसा मामूम होता है कि आज यह बहुत ज़रीब हो गयी है ।
मैं इस इतने पास से नहीं मुनना चाहता ।

दूसरा नाबीना

मुझे भी यह पसंद नहीं । फिर हमने खानकाह से बाहर घाने के
लिए कभी नहीं कहा ।

तीसरा नाबीना

हम इतनी दूर कभी नहीं घाय । हमें इतनी दूर साने न
क्या प्रायण ?

रायमे बुद्धी मंघी औरत

आज मुबह मीमम बहुत मुद्रामा था । यह चाहत ये कि हम गभी
न घागिरी लिनो का मुन्ध उठाये कम्प हमने कि आठे भर न
सिग खानकाह म मुब यह हो जाय ।

पहसा माबोना

लेकिन मुझे खानकाह में पड़े रहना प्य़ादा पसंद है ।

सबसे बुरखी-भंघी औरत
वह कहते थे कि हम जिस बजोरे में रहते हैं उसका कुछ हाल
जरूर जानना चाहिए । उन्होंने खुद भी पूरा बजोरा नहीं देखा
है । यहाँ एक ऐसा पहाड़ है जिस पर कोई नहीं चढ़ सका, ऐसी
बावियाँ हैं जहाँ कोई नहीं जाना पसंद करता, और ऐसे ग़ार हैं
जिनमें आज तक कोई बाख़िश नहीं हो सका । असलमें उनका
मंशा था कि हम लोगों को आप्रस्ताव^१ के इंतज़ार में हमेशा
खानकाह के खेरे-साया^२ बैठे रहना मुनासिब नहीं । इसलिए वह
हमको साहिल तक साना चाहते थे । वह वहाँ तनहा गये हैं ।

सबसे बुरखा भंघा माबमी
उतका कहना सही है । हमको ज़िदगी का ख़याल रखना चाहिए ।

पहसा माबोना

लेकिन यही मैदान में देखने के क़ाबिल कोई भीज नहीं है ।

दूसरा माबोना

क्या हम इस बक़्त धूप में हैं ?

तीसरा माबोना

क्या आप्रस्ताव अभी तक निकला हुआ है ?

छठवाँ माबोना

मेरा ख़याल है कि धब नहीं है । मामूम होना है कि रात प्य़ादा गयी ।

दूसरा नायिका

क्या यत्रे हैं ?

और सबके सब

कोई नहीं जानता ।

दूसरा अध्या

क्या अभी तक गायनी है ? (छट्ठें नायिका स) तुम यहाँ हो ?
हमें तो कुछ-कुछ गुमनामी देता है । यहाँ आओ ।

छठवीं नायिका

मेरे उद्यान में इस वन्य रूख अंधेरा है । जब धूप होनी है तो
मुझे वन्यों के नीचे एक भीली नवीर-सी मज़र घाती है । अन्त
घमा गुडरा मैंने तेम्ही सबीर दगो थी लकिन अब मुझ मुन्नम
जिनामी नहीं दता ।

पहला नायिका

और मुझे तो देर होन की मकर उम बन्य हानी है जब मुझ
मृग सगली है और इस वन्य में मृगा हैं ।

तीसरा नायिका

मकिन धाममान की तरफ तो दगो "गाय" कुछ मज़र थाय ।
(सबर सब धाममान की तरफ मर उठाये हैं उन तीनों को
छोड़कर जो मादरबाँधे मे जा जमीन की तरफ तारन
एते हैं ।)

छठवाँ नाबीना

मुझे नहीं मामूम होता कि हम लोग बिलकुल घासमान के भीचे हैं ।
पहला नाबीना

हमारी आवाजें इस तरह गूँज रही हैं गोया वह किसी गार^१ में हों ।
सबसे बड़का नाबीना

मेरा तो खयाल है कि उनके गूँजने का सबब शाम का वक्त है ।
नौजवान अंधी औरत

मुझ ऐसा महमूस हो रहा है कि मेरे हाथों पर चाँदनी फैली हुई है ।
सबसे बड़की अंधी औरत

मेरा खयाल है कि सितारे निकले हैं । मैं उन्हें सुन रही हूँ ।
नौजवान अंधी औरत

मैं भी सुन रही हूँ ।

पहला नाबीना

मुझ तो कोई आवाज नहीं सुनायी देती ।

दूसरा नाबीना

मुझे तो अपने खाँस सेने की आवाज सुनायी दे रही है ।
सबसे बड़का नाबीना

मेरा खयाल है कि औरतें राहों कहती हैं ।
पहला नाबीना

मैंने कभी सितारों की आवाज नहीं सुनी ।

दूसरे और तीसरे अंघे आबमो

हमने भी नहीं सुनी ।

(तायरा ने शब्द का एक गोल वक्र घतन^१ पत्तियों पर उतरता है ।)

दूसरा माबोना

सुनी सुनी ! यह ऊपर क्या है ? सुन रहे हा ?

सबसे बुरा माबोना

हमारे और घासमान के बीच से कोई चीज गुजर गयी ।

छठवाँ माबोना

हमारे बासाए-सर^२ कोई चीज हरकत कर रही है लेकिन हम उसे पा नहीं सकते ।

पहला माबोना

इस घाबाब की हकीकत मरो ममक में नहीं जाती । मे गानराट की सफ़ सौटना चाहता हूँ ।

दूसरा माबोना

हम यह जानना चाहते हैं कि हम कही है ?

छठवाँ माबोना

मैंने गढ़े होने की बौशिया भी । हमारे धारा तरफ बटि ही बटि है और कुछ महा । घन में घपने हाप भी पेनाने की जुरघन नहीं कर सकता ।

तीसरा माबोना

माभूम मही हम कही है ?

सबसे बुद्धा नाबीना
हम इसे नहीं जान सकते ।

छठवाँ नाबीना
हम जानबूझ से बहुत दूर हैं । मुझे वहाँ की कोई धारणा नहीं
सुनायी देती ।

तीसरा नाबीना
बहुत धर्म से मुझे सूखी पत्तियों की बूंधा रही है ।

छठवाँ नाबीना
हममें से किसी ने इस खजौर को खमानए-गुबिस्ता^१ में देखा है
और वह बतला सकता है कि हम कहाँ हैं ?

सबसे बुद्धी अंधी औरत
जब वहाँ धाये तो हम सब के सब धाये थे ।

पहला नाबीना
हमें कभी कुछ दिखायी ही नहीं दिया ।

दूसरा नाबीना
हमं सामंसाह परेशान होने की क्या जरूरत है । वह जल्द वापस
धायेंगे । परा देर और उनका इंतजार करो लेकिन धाइयाँ स
हम फिर उनके साथ न धायेंगे ।

सबसे बुद्धा नाबीना
हम धक्केसे धूमने नहीं निवास सकते ।

पहला माबोना

हम निकसेंगे ही न । मुझे धूमना पसंद नहीं ।

दूसरा माबोना

हमारी बाहर आने की एवाहिश नहीं थी किन्ती मे उनसे यह सम्पत्ति नहीं की ।

सबसे बुद्धी अंधी औरत

जबरी में यह तातील का दिन है । तातीलों में हम सब मेर करने निरन्तर हैं ।

तीसरी अंधी औरत

मैं सो हो रही थी कि उन्होंने आकर मेरे बंधे को हिताया घी कहा, उठो-उठो, बस्र आ गया घूप निरन्ती हुई है । क्या घूप निरन्ती हुई थी ? मुझे इसको खबर नहीं । मैंने कभी घूप मही देखी ।

सबसे बुद्धा माबोना

मैं बहुत छटा या सब मैंने घूप देखी थी ।

सबसे बुद्धी अंधी औरत

मैंने भी बहुत दिन हुए जब मैं बहुत छोटी थी मेकित घब बिन्सुस पाद नहीं ।

तीसरा माबोना

हर बार जब घूप निरन्तरी है तो यह क्यों हम बाहर लाते हैं ? क्या हम इसमें कुछ रचना आनन्द हो जाते हैं ? मुझ तो बिन इस मामूम मही होता कि रात है या दिन ?

छठवीं नाबीना

मुझे दोपहर के बख्त घूमना घण्टा मालूम होता है। मुझे उस बख्त बहुत चमक महसूस होती है और मेरी घाँवें खुलने की कोशिश करती हैं।

तीसरा नाबीना

मुझे तो अपनी स्वाबगाह^१ में कोयले के सामने बैठना ज्यादा पसंद है। आज सुबह जब भाग रोशन बी।

दूसरा नाबीना

वह हमें धूप बिताने के लिए सहन में ला सकते थे। वहाँ दोबारा की हिफाजत में तो रहते। जब दरवाजा बंद रहता है तो कोई खोज नहीं मानूम होता। मैं हमेशा दरवाजा बंद कर दिया करता हूँ। तुमने मेरी कुहनी क्यों छुई?

पहला नाबीना

मेने नहीं छुई। मैं तुमसे बहुत दूर हूँ।

दूसरा नाबीना

मैं सब कहता हूँ कि किसी ने मेरी कुहनी छुई है।

पहला नाबीना

हममें से किसी ने नहीं छुई।

दूसरा नाबीना

मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ।

सबसे बुझी अघी औरत

या गुदा ! गुदा ! हम कहाँ हैं ?

पहला माबीना

हम यहाँ हमारा नहीं बैठे रह सकते ।

(किसी दूर की थड़ी में चाहिस्ता-चाहिस्ता बारूद बजते हैं ।)

सबसे बुझी अघी औरत

उफ़ ! हम लोग खानाब्राह्मण किस्म के दूर निश्चय पाये हैं ।

सबसे बुझा माबीना

आधी रात हो गया ।

दूसरा माबीना

बापहर है । बोई जानता है ? बोनी ।

छठवाँ माबीना

मुझ मानुस नहीं मर्गिने में खयाल करता हूँ कि हम लोग साथे में हैं ।

पहला माबीना

मुझ बुद्ध महा मानुस होता । मैं बहुत दूर तक भी गया ।

दूसरा माबीना

मुझ मुग़ संगी हुई है ।

और सब बे सब

हम भी भूने और ध्यात हैं ।

दूसरा माबीना

क्या हम यहाँ पाये हुए देखे हैं ?

सबसे बुराई अंधी औरत
मुझे तो ऐसा मामूम होता है कि मैं यहाँ सदियों से हूँ।

छठवाँ नाबीना
मुझे कुछ-कुछ मामूम हो रहा कि हम कहाँ हैं।

तीसरा नाबीना
हमें उस तरफ जाना चाहिए ज़िगर से बाहर बजने की आवाज
आयी है।

(तायराने शब्द यकायक तारीकी में शोर करने लगते हैं।)
पहला नाबीना

तुम लोग सुनते हो ? सुनते हो ?

दूसरा नाबीना
यहाँ हमारे सिवाय कोई और भी है ?

तीसरा नाबीना
मुझे बहुत देर से इसका शुकहा है। कोई हमारी बातें सुन रहा है।
क्या वह सौट आये ?

पहला नाबीना
मामूम नहीं क्या है। यह हमारे ऊपर है।

दूसरा नाबीना
क्या दूसरों ने कुछ नहीं सुना ? तुम भाग हमारा खामोश रहते हो

सबसे बुरा नाबीना
हम तो अभी तक सुन रहे हैं।

मौजवान अंधी औरत

मुझ धपन दूर-गिरं हर तिन की आवाज आ रही है ।

सबसे बुझी अंधी औरत

ग गुदा ! ऐ गुदा ! हम कहीं हैं ?

छठवीं नाबीना

मुझ कुछ-कुछ मानूस हो रहा है कि हम कहीं हैं । खानजाह हम बड़ी मदी व उम पार है । हम पुराने घुम से होकर आये हैं । महात्मा जी हमको जखीरे के गुमान म साथ हैं । हम नदी स दूर नहीं हैं । अगर हम एक समझा पीर स मुनें सा उसरी आवाज भी शायद सुनायी दे । अगर महात्मा जी स मौजों ती हमको पानी व बिनारे तक जाना पड़ेगा । वहाँ शबरीरोब^१ बड़े-बड़े जहाज घाते-घाते रहते हैं । जहाजा व मन्नाह हम बिनारे पर गटे देग सेंगे । यह भी मुमकिन है कि हम उस जंगम म हों जो रीशनी के मीनार को घेरे हुए है । सबिन मुझ बाहर निश्चयन का खरता नहीं मानूस है । कोई मेरे साथ जमने पर तयार है ?

पहला नाबीना

धुपबार बटे रहें । उनका इतबार बिय आधी । हम थकी मना का रास्ता नहीं मानूस है और खानजाह के आरों मग्ग दग्ग हैं । बग उनका इतबार करणा चाहिए । यह पायेगे उम्बर पायेगे ।

कोई जानता है कि हम किस रास्ते से आये हैं ? जब हम आ रहे थे तो उन्होंने हमें समझाया था ।
पहला नाबीना

मैंने जिसबहुत ध्यान नहीं दिया ।

छठवाँ नाबीना
क्या और किसी ने ध्यान से सुना था ?

तीसरा नाबीना
आश्चर्य हमको उनकी बातों की शीर से सुनना चाहिए ।

छठवाँ नाबीना
क्या हममें से किसी की वेदार्थ इस ज़बान से नहीं है ?

सबसे बुरा आदमी
तुम्हें खूब मालूम है कि हम सब यहाँ दूसरी जगह से आये हैं ।

सबसे बुरी बंधी औरत
हम समुंदर के उस पार से आये हैं ।

पहला नाबीना
मुझे आदेश होता था कि समुंदर से करते-करते मर न जानें ।

दूसरा नाबीना
मुझे भी । हम साथ-साथ आये थे ।

तीसरा नाबीना
मैंने एक ही महास से आये ।

पहला नाबीना

सीमा कहते हैं कि हमारा गाँव गुमास की तरफ़ यहाँ से निकल
आता है, बराबर कि आसमान साफ़ हो। उसमें कोई भीमार
नहीं है।

तीसरा नाबीना

हम इसकाफ़ से यहाँ उतर गये।

सबसे बुराई अंधी औरत

मे दूसरी तरफ़ से आयो हूँ।

दूसरा नाबीना

तुम यहाँ से आयो हो ?

सबसे बुराई अंधी औरत

मुझ पर इसका खयाल करते हुए छोड़ मामूम होता है। मुझे
पर उसकी याद नहीं रही। बहुत दिन गुजर गये। यहाँ यहाँ से
ज्यादा मर्द पड़ती थी।

मौजवान अंधी औरत

मे भी बहुत दूर से आयो हूँ।

पहला नाबीना

आगिर तुम यहाँ से आयो हो ?

मौजवान अंधी औरत

यह बननामा बहुत मुश्किल है। मैं उस कच्चेकर बयान कर
नहीं हूँ। यह यहाँ से निहायत दूर है। गमुदगें व उस पार।
बढ़ बढ़ा मुन्क है। मैं गिरते इशारा मे उगता हान बना

सकती हूँ लेकिन भाँखें तो हूँ ही नहीं। मैं बहुत दिनों तक मटकती फिरती हूँ लेकिन मैंने सूरज और घाग और पानी और पहाड़ और लोगों के चेहरे और अजीब किस्म के फूल सब देखे हैं। बैसे फूल इस बज्जिरे में नहीं हैं। यह तो बिसकुस भीरान, मुनसान और ठंडा है। अब से मेरी निगाह जाती रही है मुझ फिर बू का एहसास नहीं हुआ। लेकिन मैंने अपने बाल्देन^१ और बहना को देखा है। मैं उस बक्स बहुत छोटी थी और बिसकुस न जानती थी कि कहाँ हूँ। मैं उस बक्स तक समुद्र के किनार खेला करती थी ताहम भाँखों से देखने की याद अब भी सूब है। एक दिन मैंने पहाड़ की ओटी परसे बर्फ की तरफ देखा उही दिनों मुझे उन सोमों की पहचान होने लगी थी जो अमनसीब होनेवासे हैं।

पहला नाबोना

तुम्हारा मतलब क्या है ?

भोजवान अंधी औरत

मैं अब भी कभी-कभी ऐसे आदमियों को उनकी आवाज से पहचान सकती हूँ मेरे दिल में ऐसी यादें हैं जो ज़यादा रौशन हो जाती हैं अगर मुझे उनका ध्यान न हो।

पहला नाबोना

मुझ कुछ याद नहीं मैं

(पड़ो-बड़ा बिड़िया का एक शीश शीर मखाता हुआ
पतिया व ऊपर व गुड़गता है ।)

सबसे बुद्धा नाबोना

किर मागमान ने मोच बार्द बाड गुडर रहा है ।

दूसरा नाबोना

तुम यहाँ क्यों घायो ?

सबसे बुद्धा नाबोना

किर ग पूछ रहे हो ?

दूसरा नाबोना

घपनी नौजवान सायिन मे ।

नौजवान अधी औरत

मोना ने मुझमे कहा कि मंगलमा जी मुझे घण्डा कर सखते
हैं । यह कहते हैं कि तब तब मेरी घाँगे उम्बर गुमेगी । तब
म तब बड़ोरे ग घनी जाऊँगी ।

पहला नाबोना

तब जदार हो तो सब ता' करना चाहते हैं ।

दूसरा नाबोना

क्या हम यहाँ हमेशा पड़ रहेंगे ?

तीसरा नाबोना

मंगलमा जी बहुत बुद्ध हो गये हैं । उन्हें हम मोना को घण्डा
करने का मिला घब घबन नहीं है ।

नौजवान अघी औरत

मेरी पसकें बंद हैं लेकिन मुझे मामूम होता कि मेरी धाँसों में बीनाई है ।

पहला नाबीना

मेरी धाँसों तो सुनी हुई हैं

दूसरा नाबीना

मैं सीता हूँ तब भी धाँसों सुनी रहती हैं ।

तीसरा नाबीना

धाँसों का जिक्र छोड़ो ।

सबसे बड़का नाबीना

एक रोज़ शाम को बुझा करते वक्त मुझे धीरसों की तरफ़ से एक ऐसी आवाज़ सुनायी दी कि जिसे मैं पहचान न सका । तुम्हारी आवाज़ से मामूम हो जाता है कि तुम नौजवान हो मैं तुम्हारी आवाज़ सुनकर मैं तुम्हें देखना चाहता था

पहला नाबीना

मुझे कभी इसका इन्फ़ नहीं हुआ ।

दूसरा नाबीना

वह हमें कुछ बतसाते ही नहीं ।

छठवाँ नाबीना

सोच कहते हैं कि तुम ग़ुबसूरत हो, जैसे कोई धीरत जो बहुत दूर से आयी हो ।

मौजबान मंघो औरत

मैंने अपने तन गुन कभी नहीं दया ।

सबसे बुद्धि मंघा मारमो

हमने कभी एक दूसरे को नहीं दया । हम का घापन में सबान करने हैं जवाब देने हैं माप रहने हैं घाप करने छिन हैं मरिन बिनहून नहीं जानन कि हम क्या हैं । एक दूसरे को दोनों हाथों में छू मने में बना रहता है । पाँचों हाथों में जगन बागदर हूँनी हैं

छठवाँ भावना

जब तुम मोग घुन में निरमन हो तो कभी-कभी मुन मुद्दाग बापा गियापा दना है ।

सबसे बुद्धि भावना

हमन तन घर को नहीं दया रिमन रहन है । दोबागें घोर गिहिन्यों को हाप में छून में बना रहता है । हम बिनहून नहीं जानन कि हम कहीं रहन हैं ।

सबसे बुद्धि मंघो औरत

मोग बनन है कि दार एक बिपन्न साधक शिक्का पुराना रिमा है । इस बुन क मिसा रिमन मणू जो रहन है कभी कभी मेषनी बहर मरी घानो ।

पहला भावना

जिनर घन नहीं है उहे मेषना बा बना रहता है ?

मौजवान अंधी औरत

मेरी पसकें बंद हैं लेकिन मुझे मासूम होता कि मेरी आँखों में धीमाई है ।

पहला नाबीना

मेरी आँखें तो कुसी हुई हैं

दूसरा नाबीना

मैं सोता हूँ सब भी आँखें कुसी रहती हैं ।

तीसरा नाबीना

आँखों का जिक्र छोड़ो ।

सबसे बुरा नाबीना

एक रोज़ शाम को दुआ करते वक़्त मुझे धीरों की तरफ़ से एक ऐसी आवाज़ सुनायी दी कि जिसे मैं पहचान न सका । तुम्हारी आवाज़ से मासूम हो जाता है कि तुम मौजवान हो मैं तुम्हारी आवाज़ सुनकर मैं तुम्हें बेसमा चाहता था

पहला नाबीना

मुझे कभी इसका इल्म नहीं हुआ ।

दूसरा नाबीना

बह हमें कुछ बतसाते ही नहीं ।

छठवाँ नाबीना

मौग कहते हैं कि तुम ग़ुबग़ूरत हो, जैसे कोई धीरत जो बहुत दूर से आयी हो ।

नौबतान छठी औरत

मैंने अपने तह भूष कमी नहीं देखा ।

सबसे बुरा अंधा आबमी

हमने कमी एक दूसरे को नहीं देखा । हम तो आपस में सवाल करते हैं जवाब देते हैं साथ रहते हैं साथ चलते फिरते हैं, लेकिन बिलकुल नहीं जानते कि हम क्या हैं । एक दूसरे को दोनों हाथों से छू लेने से क्या होता है । धाँसे हाथों से क्या बाँधबर होती है

छठवाँ नाबीना

जब तुम सोम भूप में निकलते हो तो कमी-कमी मुझे तुम्हारा साया दिखायी देता है ।

सबसे बुरा नाबीना

हमने उस घर को नहीं देखा जिसमें रहते हैं । दीवारों और सिड़कियों का हाथ से छूने से क्या होता है । हम बिलकुल नहीं जानते कि हम कहाँ रहते हैं ।

सबसे बुरा अंधी औरत

सोम कहते हैं कि यह एक बिलकुल तारीक शिकस्ता पुराना किस्सा है । इस दुर्ज के सिवा जिसमें साथू जी रहते हैं वहाँ कमी रोशनी नष्ट नहीं आती ।

पहला नाबीना

जिम्हें धाँसे नहीं हैं उन्हें रोशनी की क्या आवश्यक है ?

छठवाँ माबीना

जब मैं खानकाह के पासपास भेड़ें पंराता हूँ तो शाम के बस
बहु बुर्ज की रीशमी बन्दर भाप ही भाप भर पहुँच जाती है।
उन्होंने मुझे कभी नहीं भटकाया।

सबसे बुद्धा माबीना

हमें साथ रखते मुहर्त गुजर गई लेकिन हमने एक दूसरे को
कभी नहीं देखा, गोया हम हमेशा तनहा रहते हैं। बिना इसे
मुहम्मद नहीं पैदा होती ...

सबसे बुद्धी अंधी औरत

मुझे कभी-कभी क्वाय में मान्य होता है कि मैं देख सकती हूँ।

सबसे बुद्धा अंधा

मुझे सिर्फ़ अपने ही म दिखायी देता है।

पहला माबीना

मैं अक्सर आधी रात को स्वाब देखता हूँ।

दूसरा माबीना

जब हाथों में हरबत ही नहीं होती तो इंसान बिना भीज ना
स्वाब देख सकता है ?

(एक लुप्तम जंगल को हिंसा देता है और पक्षिणी अड़ने
सगती हैं।)

पाँचवाँ माबीना

किसने मेरे हाथ छुए ?

पहला नाबीना

हमारे चारों तरफ कोई भीज गिर रही है ।

सबसे बुरा नाबीना

ऊपर से आ रही है । मासूम नहीं क्या है

पाँचवाँ नाबीना

किसने मेरे हाथ छुए । मैं सो रहा था । मुझे खूब सोने दो ।

सबसे बुरा नाबीना

किसी ने तुम्हारे हाथ नहीं छुए ।

पाँचवाँ नाबीना

किसने मेरे हाथ पकड़े थे ? ओर से बोसो । मैं खरा कँका मुनठा हूँ ।

सबसे बुरा नाबीना

हमको खुद नहीं मासूम ।

पाँचवाँ नाबीना

क्या कोई हमें सबरवार करने आया है ?

पहला नाबीना

इसको जवाब देना क्लिबूस है । उसे कुछ सुनायी नहीं देता ।

तीसरा नाबीना

यह मानना पड़ेगा कि वहरे बड़े यथमसीब होते हैं ।

सबसे बुरा नाबीना

मैं बैठे बैठे बक गया ।

छठवाँ नाबीना

मैं यही रहते रहते बक गया ।

दूसरा नाबीना

मुझे ऐसा मामूम होता है कि हम लोग बहुत दूर बंटे हुए हैं ।
आधो चरा धीर करीब आ जायें ठंड पड़ने लगी ।

तीसरा नाबीना

मुझ लड़े होते डर मामूम होता है । जहाँ बंटे ही बही बंटे रही ।

सबसे बुद्धा नाबीना

मामूम नहीं हम लोगों के बीच में क्या ही ।

छठवाँ नाबीना

मेरे दोनों हाथों से खून निकलता हुआ मामूम होता है । मैं लड़ा
होता चाहता था ।

तीसरा नाबीना

आकाश से ऐसा मामूम होता है कि तुम मेरी तरफ झुके हुए हो ।

(अंधी पगली धीरत जोर से धपपी धालें मलती है और
कराहते हुए बार-बार बेजान साधू की तरफ सर फेरती है ।)

पाँचवाँ नाबीना

मुझ अब दूसरा शोर सुनायी दता है ।

सबसे बुद्धी अंधी धीरत

मेरे खयाल में हमारी पगली बहन धाले मल रही है ।

दूसरा नाबीना

बस वह भी क्या करती है मैं रोड राग को सुना करता हूँ ।

तीसरा नाबीना

वह पगली से कुछ नहीं बोधती ।

सबसे बुद्धी अंधी औरत

बब से बच्चा पेदा हुआ वह एक बार भी नहीं बोली । मामूम
होता है वह करती है

सबसे बुद्धा नाबीना

तो क्या तुम लोगों को यहाँ कर नहीं सगता ?

पहला नाबीना

किसको ?

सबसे बुद्धा नाबीना

बाकी बाहम सब लोगों को ।

सबसे बुद्धी अंधी औरत

हैं हम सब यहाँ करते हैं ।

बीबवान अंधी औरत

हम बहुत दिनों से कर रहे हैं ।

पहला नाबीना

तुम यह क्यों पूछते हो ?

सबसे बुद्धा नाबीना

मैं खुद नहीं जानता कि क्यों पूछता हूँ कोई बात ऐसी है जो मेरे
बेहून में नहीं आती एसा मामूम होता है कि मेरे कानों में यका-
यक किसी के रोने की आवाज आती

पहला नाबीना

करने से क्या होता है । शायद पगमी औरत होती है ।

सबसे बुढ़ा नाबीना

नही इसके अमावा कुछ धीर है यकीनन कुछ धीर है सिर्फ
उसके रोने से मुझ लौक नही मालूम होता ।

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

बहु जब अपने बच्चे की दूध पिमाने लगती है तो हमेशा रोती है ।

पहला नाबीना

सिर्फ वही इस तरह रोती है ।

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

सोच कहते हैं कि धर्म भी कभी-कभी उस दिखायी देता है

पहला नाबीना

हम किसी का रोना नहीं सुनते ।

सबसे बुढ़ा नाबीना

रोने के लिए देवना जरूरी है ।

मौजवान अंधी औरत

मुझे वही कहीं से फूलों की महक आती है ।

पहला नाबीना

मुझसे सिर्फ मिट्टी की बूझाती है ।

मौजवान अंधी औरत

हमारे करीब फूल हैं, फूल हैं ।

दूसरा नाबीना

मुझे तो सिर्फ मिट्टी की बूझाती है ।

नीमबाल अंधी औरत

मुझे अभी हवा में फूलों की सुराबू आयी ।

तीसरा नाबीना

मुझे तो सिर्फ मिट्टी की बूंधा रही है ।

सबसे बुरा नाबीना

मेरा प्रयास है कि औरतें सही कहती हैं ।

छठवाँ नाबीना

फूल कहाँ हैं ? मैं आकर चुनूँगा ।

नीमबाल अंधी औरत

बाँके हो जाओ तुम्हारे बायीं तरफ हैं ।

(छठवाँ अंधा आहिस्ता आहिस्ता बढ़ा होता है और दरस्तों और झड़ियों में चलभट्टा हुआ नगिनों की तरफ जाता है जिन्हें वह पैरों से कुचल डालता है ।)

नीमबाल अंधी औरत

मुझ सुनायी देता है कि तुम हरी झलियों की संधे डालते हो ।
ठहरो, ठहरो ।

पहला नाबीना

फूलों की झिझक मत करो सोचो कि क्योंकर सौटोवे ।

छठवाँ नाबीना

अब मैं अपने श्रद्धों को फेरने की प्रयत्न नहीं कर सकता ।

नीमबाल अंधी औरत

हरगिमत आना । ठहरो (बहु उठती है) आह ! जमीन कितनी

सबसे बुरा नाबीना
मैं समझता हूँ कि औरतें सही कहती हैं ।

तोसरा नाबीना
तब तो वह यही मानता होगा ।

पहला नाबीना
हवा कहो से भाती है ?

दूसरा नाबीना
समुंदर से ।

सबसे बुरा नाबीना
हवा हमेशा समुंदर की तरफ से भाती है । समुंदर हमें चारा
तरफ से घेरे हुए है । वह किसी दूसरी तरफ से नहीं भा सकती ।

पहला नाबीना
मई समुंदर का खयाल मत करो ।

दूसरा नाबीना
यह क्योंकर मुमकिन है । वह तो जरा दूर में हमारे पास भा
आयेगा ।

पहला नाबीना
तुम्हें क्या मासूम बि वह समुंदर की ही भाषा है ।

दूसरा नाबीना
मुझे उसकी सहरें ऐसी करीब मासूम होती हैं कि मैं उसमें अपने
हाथ दुबा सकता हूँ । हम यही नहीं ठहर सकते । वहीं वह हमें
चारों तरफ से घेर न सके ।

सबसे बुरा नाबीना

तुम कहीं जाना चाहते हो ?

दूसरा नाबीना

इसकी कुछ परवाह नहीं इसकी कुछ परवाह नहीं । जब पानी की मह गरज नहीं सुन सकता । यहाँ से भाग बसो बलो ।

तीसरा नाबीना

मुझ ऐसा भानूम होता है कि कोई धीर भावाज भी है । कान लगाओ । (तेज धीर दूर के क्रवमों की धावाज सूखे पत्तियों में सुनायी देती है ।)

चहत्ता नाबीना

कोई भीज हमारे तरफ भा रही है ।

दूसरा नाबीना

साधू भी है । साधू भी है ! वह वापस भा रहे हैं ।

तीसरा नाबीना

बहु छोटे-छोटे क्रवम रस रहे हैं, विमल एक छोटे बच्चे की तरह

दूसरा नाबीना

भाज उन्हें कुछ बुरा-भला मत कहना ।

सबसे बुरा अंधी औरत

मेरे सपना में यह आदमी के क्रवम नहीं हैं ।

(एक बड़ा वृत्ता जंगल में धाता है और उनके सामने से गुजरता है । सपना है ।)

पहसा नाबीना

यह कौन है ? अरे तुम कौन हो ? हमारे ऊपर रहस करो हम बहुत बेर से बैठे हुए हैं (कुत्ता रुक जाता है और लौटकर अपने अगले पंखे को पहले नाबीना की घुटनियों पर रस देता है ।) अरे ! आह ! तुमने मेरी घुटनियों पर क्या रस दिया ? यह क्या है ? अरे, यह तो कोई जानवर है ! कुत्ता माफूम होता है हाँ हाँ कुत्ता ही है । यह हमारी खानकाह का कुत्ता है । इधर आओ इधर आओ । हमें रास्ता दिखाने आया है । इधर आ इधर आ !

पहसा नाबीना

बह हमें रास्ता दिखाने आया है । हमारे पैरों के निशान दसता चला आया है । यह मेरे हाथ काट रहा है गोमा मुझ सदियों के बाद ऐसा है । खुशी के मारे गुराँ रहा है खुशी के मारे मर न जाये ! सुनो काम लगाओ !

और सब के सब

इधर आ ! इधर आ !

सबसे मुड्डा नाबीना

शायद वह किसी आदमी के आगे-आगे आया है

पहसा नाबीना

महों, नहीं बिल्कुल अफसा आया है । मुझ और बिना के जाने की आहट नहीं मिसती । अब हमें किसी दूसरे मासिक की जरूरत नहीं । इससे अच्छा और कीमती होगा । हम जहाँ आयेगे वहीं

जायगा, हमारा हुषम मानेगा—

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

मे इसके साथ नहीं जा सकती ।

नीचवान अंधी औरत

में भी नहीं जा सकती ।

पहला नाबीना

क्यों ? हमारी निगाह से इसकी निगाह बेहतर है ।

दूसरा नाबीना

इन औरतों को बकने दो ।

तीसरा नाबीना

मेरा खयाल है कि आसमान में कुछ सौर्य^१ हो गया है । हवा अब साफ़ है—मैं बूझ सोंस ले सकता हूँ ।

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

समुंदरी हवा हमारे चारों तरफ़ बस रही है ।

छठवाँ नाबीना

मुझे ऐसा मामूम होता है कि रोशनी आ रही है । शायद आऊ-ताब निकल रहा है ।

सबसे बुढ़ा नाबीना

मेरा खयाल है कि सबी पड़नेवाली है ।

पहला नाबीना

अब हमें रास्ता मिल जायेगा । कृता मुझे सीप रहा है । वह

पहला नाबीना

मेरा खयाल है... मेरा खयाल है कि यह साधू भी है। वह सच है। धाधो धाधो।

दूसरा नाबीना

क्या वह सच है ?

तीसरा नाबीना

सब वह मरे नहीं हैं।

सबसे बुरा नाबीना

कहाँ हैं ?

छठवाँ नाबीना

धाकर देखो।

(पगली औरत और बहरे अंधे क सिखा सब उठते हैं और टटोलते हुए मुँह की तरफ जाते हैं।)

दूसरा नाबीना

क्या यही है ? यही ?

तीसरा नाबीना

हाँ हाँ, मैं उन्हें पहचानता हूँ।

पहला नाबीना

या भुदा, या भुदा, हमारा क्या हाल होगा !

सबसे बुरा भी अंधी औरत

स्वामी जी ! क्या यह तुम्हीं हो ? तुम्हें क्या हो गया है ? हमारी बातों का कुछ जवाब दो। हम सब तुम्हारे पास

बसा है । हाय हाय !

सबसे बुढ़ा नाबीना

बोझा-सा पानी लाधो । शायद अभी कुछ जान है ।

छठवाँ नाबीना

हाँ, उन्हें बचाना चाहिए — पासिबन् वह हमें खानकाह तक पहुँचाने के काबिल हो आयेंगे ।

तीसरा नाबीना

बिसकूल बेकार.. मुझे उनके दिल की धावाज नहीं सुनायी बती .. बिसकूल ठंडे हो गये ।

पहला नाबीना

एक सपना भी न बोले ..

तीसरा नाबीना

उन्हें साबिम था कि हमें बता देते ।

दूसरा नाबीना

हाय वह कितने बुढ़े हो गये थे । मैंने अबकी पहली बार उनका चेहरा छुसा है..

तीसरा नाबीना

(साथ को टटोलकर) हम लोगों से खबरे हैं !

दूसरा नाबीना

इनकी आँखें खुली हुई हैं । हाय बाँधे हुए मरे हैं ।

पहला नाबीना

उनके इस तरह मरने की कोई बजह नहीं थी

दुसरा नाबीना

बहु सजे नहीं है । एक पत्थर पर बठे हैं

सबसे कुड्डी अंधी औरत

या जुवा ! ... मुझे यह खब न । मामूम था ... न मामूम था ... वह
इतने दिनों से बीमार थे ... भाव उन्हें बहुत तकसीर हुई होगी
हाय-हाय ! वह कभी शिकायत का एक हक खवान पर नहीं
साम ... सिर्फ हमारे हाथों का दबाकर अपना दर्ददिस बाहिर
किया ... इंसान हमेशा इन बातों को नहीं समझता ... बर्मी नहीं
समझता ... भाभा मिसकर उनक लिए दुआए खैर करें ।

(घोरतें घुटनों के बल बैठकर कराइती है ।)

पहला नाबीना

मुझे झुनते हुए डर मामूम होता है ...

दुसरा नाबीना

क्या मामूम किस चीज पर घुटने पड़े

तीसरा नाबीना

क्या बही बीमार थे । हमसे कभी नहीं जलमाया ।

दुसरा नाबीना

जाते बसत बहु कुछ चाहिस्ता चाहिस्ता वह रहे थे । शायद
हमारी मौजबान बहन से कुछ कह रहे थे । क्या उन्होंने क्या कहा ?

पहला नाबीना

बहु खवास न देंगी ।

दूसरा नाबीना

क्या अब तुम हमारी बातों का जवाब न दोगी ? तुम कहाँ हो बीबी !

सबसे बूढ़ी जीरत

तुम लोगों ने उन्हें बहुत परीशान किया । तुम्हीं ने उन्हें मारा है । तुम आगे नहीं बढ़ते थे । तुम सबक के बिना पत्थरों पर बैठकर खाना चाहते थे । तुम सारे दिन मुनमुनामा करते थे । मैंने उन्हें आहूँ बीचते हुए सुना है । आखिर वह मायूस हो गये

सबसे बूढ़ी

हमें कुछ नहीं मालूम था । हमने उनकी सूरत कभी नहीं देखी । हम इन फूटी आँखों से क्या देख सकते हैं ! उन्होंने कभी किसी का गिना नहीं किया ... अब मौका निकल गया मैंने तीन आव-मियों को मरते देखा ... लेकिन इस तरह कोई नहीं मरा ... अब हमारे बारे में ...

पहला नाबीना

मैंने उन्हें हरमियन नहीं परीशान किया ... मैंने कभी कुछ नहीं कहा ।

दूसरा नाबीना

न मैंने ही । हम बैठकर उनका हुकम मानते थे ।

तीसरा नाबीना

वह पगली के बास्ते पानी खाने जा रहे थे, वही मर गये ।

पहला माबीना

घब हम क्या करें । कहीं जायें ।

तीसरा माबीना

हुता कहीं गया ?

पहला माबीना

मह बैठा है । वह साश के पास से हटता ही नहीं ।

तीसरा माबीना

उसे हटा दो भगा दो, भगा दो !

पहला माबीना

मह इस साथ को नहीं छोड़ता ।

दूसरा माबीना

हम एक मुर्दा आदमी के पास नहीं बैठ सकते... हम इस तरह तारीकी में नहीं मरना चाहते ।

तीसरा माबीना

आओ हम लोग मिलकर बैठें इमर-उमर न मियाँ, एक दूसरे के हाथ पकड़ लें । सब इसी पत्थर पर बैठें । और सोच कहीं हैं ? यहाँ आ जाओ सब यहाँ आ जाओ ।

सबसे बूढ़ा माबीना

तुम कहीं हो ?

तीसरा माबीना

मे यहाँ हूँ । हम सब एक साथ हैं न ? जरा धीरे-धीरे आओ । तुम लोगों के हाथ नहीं हैं ? सब्त सभी हैं ।

नौजवान अंधी औरत
घोड़ ! तुम सोगो ने हाथ कितने सद हैं !
तीसरा नाबीना

तुम क्या कर रही हो ?

नौजवान अंधी औरत
मैं घाँसो पर हाथ फेर रही थी । मुझे ऐसा मासूम होता था
कि मेरी घाँसों बुसा ही चाहती हैं ।
पहला नाबीना

यह रो कौन रहा है ?

सबसे बुढ़ी अंधी औरत
वही पगली सिसक रही है ।

पहला नाबीना
और अभी तक उसे हकीकत मानूम ही नहीं ।
सबसे बुढ़ा नाबीना

मेरा ज्वाला है कि हम सब यहीं मरेंगे ।
सबसे बुढ़ी अंधी औरत
यासिबन् कोई धायेगा -

सबसे बुढ़ा नाबीना
और कौन धानवाला है ?
सबसे बुढ़ी अंधी औरत

यह नहीं मानूम ।

सबसे बुझी अघी औरत
बही पगली सबसे ब्यादा बरकरा रही है ।

तीसरा नाबीना
मुझे सड़के की आवाज नहीं सुनायी देती ।

सबसे बुझी अघी औरत
शायद वह अभी तक बूझ पी रहा है ।

सबसे बुझा नाबीना
एक बही है जो देख सकता है कि हम कहीं हैं ।

पहला नाबीना
मुझे शुमाली हवा की आवाज आ रही है ।

छठवाँ नाबीना
मेरा खयाल है कि सितारे छिप गये । अब बर्फ़ गिरेगी ।

दूसरा नाबीना
तब तो हमारा नाम ही तमाम हुआ ।

तीसरा नाबीना
अगर हमने स कोई सो पाये तो उसे फ़ौरन बगा देना चाहिए ।

सबसे बुझा नाबीना
मुझे जोर से नौद आ रही है ।

(एक आँधी पत्तियाँ को उड़ा देती है ।)

जीववान अघी औरत
तुम लोग भूखी पत्तियों की आवाज सुन रहे हो ? मेरा खयाल है
कोई हमारी तरफ़ आ रहा है ।

बूसरा नाबीना

हवा है, काम सयाकर सुनो !

तीसरा नाबीना

धन कोई न आयेगा !

सबसे बुरा नाबीना

शायद कामी सर्वाँ आ रही है ।

नौजवान अघी औरत

मुझे किसी आदमी के दूरे पर चलने की आवाज सुनायी देती है ।

पहला नाबीना

मुझे सिर्फ सूखी पत्तियों की आवाज सुनायी देती है !

नौजवान अघी औरत

मुझे किसी के कदमों की आहट मिस रही है ।

बूसरा नाबीना

मुझे सिर्फ गुमाशी हवा की आवाज सुनायी देती है ।

नौजवान अघी औरत

मैं तुमसे सब कहती हूँ कोई हमारी तरफ़ आ रहा है !

सबसे बुरा अघी औरत

मुझे भी किसी की बहुत घीमी पास की आवाज सुनायी देती है ।

सबसे बुरा नाबीना

मेरा सवाल है कि औरतें ठीक कहती हैं ।

(पत्र के टुकड़े गिरने लगते हैं ।)

पहसा माबीना
उकड़ उकड़ ! यह मेरे हाथों पर इतनी ठंडी बौन-सी बीज
रही है !

छठवाँ माबीना
बक है ।

पहसा माबीना
आधो घोर सिमटकर बैठें ।
बीजबान अंधी औरत
सेकिन ब्रह्मो की आबान् को तरक बान लगायी ।
सबसे बुढ़ी अंधी औरत
सुवा के लिए एक समहा कूप हो जायी ।
बीजबान अंधी औरत
ऊरोब होती जाती है । हाँ, ऊरोब होती जाता है । सुनी ।
(दफ़्ततन् पगली घोरत का बच्चा बीघेरे में जोर से २
समता है ।)

सबसे बुढ़ा माबीना
बच्चा रो रहा है !

औरत

बह देग रहा है, देस -
है । (बह बच्चे को
बसती है जियर से ३)

हैं। दूसरी ओरतें मुतकभिकर अंदाज से उसके साथ बसती हैं और उसे घेर लेती हैं।) मैं इस आवाज की तरफ जाती हूँ।

सबसे बुरा नाबीना

होशियार रहना।

जीबवान अथी औरत

उक ! कितनी जोर से रोता है, क्या है। मत रो बेटे। करो मत। करने की कोई बात नहीं है, हम सब तुम्हारे पास हैं। तुम क्या देख रहे हो ? करो मत। इस तरह मत रोओ। तुम क्या देखते हो ? हमसे बससाधो, बाहिर यह क्या चीज है ?

सबसे बुरा अथी औरत

कदमों की आवाज करीब आती जाती है, सुनो गौर से सुनो।

सबसे बुरा नाबीना

मुझे सूखी पत्तियों में किसी के कपड़ों की सरसरहट सुनायी देती है।

छठवाँ नाबीना

क्या कोई औरत है।

सबसे बुरा नाबीना

सिर्फ आदमियों की आवाज है।

पहला नाबीना

शायद समुद्र सूखी पत्तियों पर बह रहा है ?

पहुसा माबीना

उफ़ उफ़ ! यह मेरे हाथों पर इतनी ठंडी कौन-सी चीज़ गिर
रही है !

छठ्ठी माबीना

बर्फ़ है ।

पहुसा माबीना

आग़ो धीरे सिमटकर बैठें ।

नौजवान अंधी औरत

लेकिन क़दमों की आवाज़ को तय्यक कान समायी ।

सबसे बुढ़ी अंधी औरत

बुढ़ा के लिए एक समहा चुप हो जायी ।

नौजवान अंधी औरत

करीब होती जाती है । हाँ करीब होती जाती है । सुनो !

(वक्रमयत्न पगली औरत का बच्चा झेंधेरे में और से रीने
सपता है ।)

सबसे बुढ़ा माबीना

बच्चा रो रहा है !

नौजवान अंधी औरत

बहु दूर रहा है, बेग़ रहा है । तब ही इतनी और से रोता
है । (बहु बच्चे की अपनी गोद में से सेती है और उस तय्यक
बसती है जिधर से क़दमाँ की आवाज़ आती हुई मासूम होती

है। दूसरी ओरों मुझकीकर अवाज से उसके साथ बसती हैं
और उसे घेर लेती हैं।) मे इस आवाज की तरफ जाती हैं।

सबसे बुरा नाबीना

होशियार रहना।

नौजवान अंधी औरत

उठ। किसी ओर से रोता है, क्या है। मत रो बेटे। डरो
मत। डरने की कोई बात नहीं है, हम सब तुम्हारे पास हैं।
तुम क्या देख रहे हो? डरो मत। इस तरह मत रोओ। तुम
क्या देखते हो? हमसे बतलाओ, आखिर यह क्या चीज है?

सबसे बुरा अंधी औरत

इन्दों की आवाज करीब जाती जाती है, सुनी, और से सुनी।

सबसे बुरा नाबीना

मुझे सूखी पतियों में किसी के कपड़ों की सरसराहट सुनायी
देती है।

छठवाँ नाबीना

क्या कोई औरत है।

सबसे बुरा नाबीना

सिर्फ आवाजियों की आवाज है।

पहला नाबीना

शामद समुद्र सूखी पतियों पर बह रहा है?

मीजवान अंधी औरत

नहीं नहीं, कदमों की आवाज है, कदमों की आवाज है ।

सबसे कुछड़ी अंधी औरत

हमें अभी मालूम हुआ जाता है सूखी पत्तियों की तरफ का सगामे रही ।

मीजवान अंधी औरत

सुन रही हूँ सुन रही हूँ । बिसकुल पास ! सुनो सुनो ! बच्चे, तुम क्या देख रहे हो ? तुम क्या देख रहे हो ?

सबसे कुछड़ी अंधी औरत

वह किस तरफ तक रहा है ?

मीजवान अंधी औरत

वह कदमों की आवाज हो की तरफ मुँह किये हुए है । देखो, देखो जब मैं उसका मुँह फेर देती हूँ वह फिर उसी तरफ तकने लगता है । वह देख रहा है हाँ देख रहा है । वह कोई अजीबोगरीब चीज देख रहा है ।

सबसे कुछड़ी अंधी औरत

(धागे बककर) उस हमसे ऊपर उठा दो ताकि लूब देख सके ।

मीजवान अंधी औरत

हट जाओ (वह बच्चे को अर्धा की जमात से ऊपर उठाती है) कदमों की आवाज बिसकुल हमारे सामने आकर रुक गयी है —

सबसे कुछड़ा माबीना

हाँ वह बिसकुल हमारे सामने आ गयी, ठीक सामने ।

मीनबान अंधी औरत

तुम कौन हो ?

सबसे बुरही अंधी औरत

हमारे अमर रहम करो !

(सामोसा)

(सन्नाटा है । बच्चा गला फाड़-फाड़कर रोने लगता है ।)



मौजबान अंधी औरत

मही मही, कदमों की धाबाज है, कदमों की धाबाज है ।

सबसे बुरही अंधी औरत

हमें अभी मासूम हुमा जाता है, सूखी पतियों की तरफ सगाये रूहो ।

मौजबान अंधी औरत

तुम रही हैं सुन रही हैं । बिसकुस पास ! सुनो सुनो !
तुम क्या देख रहे हो ? तुम क्या देख रहे हो ?

सबसे बुरही अंधी औरत

बहु किस तरफ ताक रहा है ?

मौजबान अंधी औरत

वह कदमों की धाबाज हो की तरफ मुंह किये हुए है । वो देखो, जब मैं उसका मुंह फेर देती हूँ वह फिर उसी तरफ ताक लगता है । वह देख रहा है, हाँ देख रहा है । वह कोई अजीब तरीक चीज देख रहा है ।

सबसे बुरही अंधी औरत

(आगे बढ़कर) उसे हमसे ऊपर उठा दो ताकि खूब देख सके

मौजबान अंधी औरत

हट जाओ (वह बच्चे को अंधा की जमात से ऊपर उठाती है)
कदमों की धाबाज बिसकुस हमारे सामने आकर रम गयी है-

सबसे बुरहा नाबीना

हाँ वह बिसकुस हमारे सामने आ गयी, ठीक सामने ।

नौजवान मंघी मौरत

तुम कीन हो ?

सबसे बुद्धी मंघी मौरत

हमारे ऊपर रहम करी ।

(सामोश)

(सन्नाटा है । बन्धा गया फाड़-फाड़कर रोने लगता है ।)

